Sanskritik aur Samajik Anusandhan
www.shodhjournal.com
ISSN: 2582-5852; Impact Factor: RJIF 5.44
Received: 04-06-2020; Accepted: 20-06-2020; Published: 05-07-2020
Volume 1; Issue 2; 2020; Page No. 06-07

साहित्य पर महामारी का प्रभाव

अनीता
एम.फिल. हिंदी, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत

प्रस्तावना

रहिमन विपदा हू भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में,जान परत सब कोय।

महामारियों के संदर्भ में हिन्दी के कवि रहीम की पंक्तियाँ बिल्कुल सार्थक प्रतीत होती है। वैश्विक महामारियाँ सदैव से समय और भविष्य दोनों को प्रभावित करती आई है। इन महामारियों से राजनीति, भूगोल के साथ–साथ समाज और साहित्य भी अछूता नहीं है। इतिहास गवाह है, कला हो या साहित्य, संगीत हो या सिनेमा सभी ने अपने समय की महामारियों, आपदाओं, विसंगतियों को बखूबी चित्रित किया है।
हिन्दी साहित्य भी इससे अछूता नहीं है। हिन्दी के साहित्यकार सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने अपनी आत्मकथा 'कुल्लीभाट' में इन्फ्लुएज़ा के प्रकोप से हुई मौतों का वर्णन किया है, जिसमें उनकी पत्नी, एक साल की बेटी और परिवार के कई सदस्यों और रिश्तेदारों की जान चली गयी थी। निराला इस त्रासदी का चित्रण करते हुए लिखते है कि–

'एक ऊँचे टीले पर बैठकर में लाशों का दृश्य देखता था। मन की अवस्था बयान से बाहर। डलमऊ का अदभूत टीला काफी मशूहर जगह है। वहीं गंगाजी में लाशें इकट्ठी थी। उसी पर बैठकर घण्टों वह दृश्य देखा करता था।' (1)

आंचलिक उपन्यासकार फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास 'मैला आँचल' में भी मलेरिया और कालाबुखार की विभीषिका के बीच ग्रामीण जीवन की व्यथा का चित्रण किया है।

'मार्टिन का पंखराज घोड़ा और सिविलसर्जन साहब की हवागाड़ी जब तक मेरीगंज पहुँची, मेरी को मलेरिया निगल चुका था।' (2)

'कालाबुखार का नाम पहले लोगों ने कभी सुना था? आजकल कालाबुखार घर–घर तक फैल गया है।' (3)

इसी प्रकार प्रसिद्ध कन्नड़ कथाकार यू०आर० अनंतमूर्ति की रचना 'संस्कार' में शहर में फैली प्लेग महामारी का वर्णन देखने को मिलता है। उपन्यास में एक प्रमुख किरदार नारणप्पा की मृत्यु प्लेग से हो जाती है।

'नारणप्पा की मृत्यु शिवमोग्गे से लौटने पर तेज बुखार और पेट के निचले भाग में निकली हुई गिलठी के कारण हो जाती है।' (4)

प्रगतिशील लेखक संगठन के पुरोधाओं में से एक राजिंदर बेदी की कहानी 'क्वारंटीन' में महामारी से ज़्यादा उसके बचाव के लिए निर्धारित उपायों और अलग किए गए क्षेत्रों के खौफ का वर्णन है। उर्दू में छपी इस कहानी का अनुवाद संजीव कुमार और डॉ० जिया उल हक़ ने मिलकर किया है। इस कहानी में वे लिखते हैं कि 'प्लेग तो खौफनाक था ही, मगर क्वारंटीन उससे भी ज़्यादा खौफनाक था।'
उधर यदि विश्व साहित्य पर नज़र डालें तो प्रसिद्ध फ्रांसीसी उपन्यासकार अल्बर्ट कामू ने अपने उपन्यास 'प्लेग' के माध्यम से फाँसीवाद और नाजीवाद के उभार के साथ ही प्लेग के कारण हुई त्रासदी का वर्णन किया है। डॉक्टर रियों के माध्यम से व्यक्ति की मनोस्थिति का चित्रण उपन्यास में किया गया है। डॉक्टर रियो खिड़की के पास खड़े होकर सोचते है कि :–
'सभी जानते हैं कि दुनिया में बार–बार महामारियाँ फैलती रहती हैं, लेकिन जब नीले आसमान को फाड़कर कोई महामारी हमारे ही सिर पर आ टूटती है। तब न जाने क्यों, हमें उस पर विश्वास करने में कठिनाई होती है। इतिहास में जितनी बार युद्ध लड़े गए है, उतनी ही बार प्लेग भी फैली है। फिर भी प्लेग हो या युद्ध दोनों ही जैसे लोगों को बिना चेतावनी दिए आ पकड़ते हैं।' (5)
महामारियों की कल्पना में नोबेल विजेता जोस सेरामागो का उपन्यास 'ब्लाइंडनेस' अनोखा है। इस उपन्यास में लोग भविष्य के वायरस से मरते नहीं, बल्कि अंधे हो जाते हैं। यह अंधापन वर्तमान को प्रतिबिंबित करता है, जहाँ सरकार निरंकुश है। इसी तरह कोलम्बियाई कथाकार गेब्रियल गर्सिया मार्खेस के उपन्यास 'लव इन द टाइम ऑफ कॉलरा' में बींसवी सदी के अंत में एच०आई०वी० मानव जाति पर प्रहार करता है। तब सेक्स तथा मौत को जुड़ा माना जाने लगा था। कुछ समय पहले लिंग मा का उपन्यास 'सेवरेंस' आया, जिसमें भी महामारी के बीच अतीत और उसके बोझ के बारे में हैं। इसी प्रकार की कई रचनाएँ है जिनमें महामारियों, आपदाओं, विसंगतियों की त्रासदियों का वर्णन किया गया है।
आज की कोरोना महामारी के समय में ज़्यादातर लेखक वर्ग ऑनलाइन है तो वहीं दुनिया ही नहीं भारत में भी विभिन्न भाषाओं में कवि कथाकार सोशल मीडिया के जरिए खुद को अभिव्यक्त कर रहें है। साहित्य की खास बात यह है कि साहित्य की अभिव्यक्ति कभी रूकती नहीं है। बस उसको व्यक्त करने का नजरिया व तरीका बदल जाता है। डिजिटल दुनिया ने दूर रह रहे लोगों को पास कर दिया है। फेसबुक लाइव हो या यू टयूब लाइव इसके जरिए लेखक, पाठकों से सीधे जुड़ रहे हैं। उनसे बात करके सवालों के जवाब दे रहें है साथ ही अपनी रचनाएँ पढ़कर सुना रहे हैं।
देश के बड़े प्रकाशन भी इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम उठा रहें हैं। राष्ट्रीय पुस्तक न्यास जहाँ कोरोना पर शोध आधारित किताबें लिखवा रहा है। वहीं वेस्टलैंड, एका, हिंदुयग्म और पेंग्विन जैसे प्रकाशक ई–पुस्तकों की बिक्री पर जोर दे रहें हैं। वाणी प्रकाशन ने ऑनलाइन साहित्य महोत्सव 2020 के नाम से एक लाइव कार्यक्रम शुरू किया है। सोशल मीडिया साहित्य के लिए बड़े मंच बन कर उभर रहें हैं। लेखक और कवि लाइव वेंबिनार कर रहे हैं जिसमें गद्य से लेकर पद्य तक की अभिव्यक्ति हो रही है। अहम बात यह है कि इसमे मंच की जरूरत

नहीं है। खासकर अप्रकाशित लेखकों को। इन लेखकों के लिए सोशल मीडिया वरदान साबित हो रहीं है। साथ ही साथ कई प्रवासी मजदूरों के गीत व कहानी आदि भी सामने आ रही है। इस क्षेत्र में बॉलीवुड की हस्तियाँ भी पीछे नहीं है। प्रवासी मजदूरों के दर्द को बयाँ करती तापसी पन्नू की कविता 'प्रवासी' काफी चर्चा में आई।

'हम तो बस प्रवासी हैं, क्या इस देश के वासी हैं?
खाने को तो कुछ न मिल पाया, भूख लगी तो डंडा खाया।'

इस कविता में तापसी पन्नू ने प्रवासी मजदूरों के उस दर्द को बयाँ किया जिनका सामना उन्होंने कोरोनाकाल में किया है। इसी तरह गुलज़ार की कविता 'मरेंगे तो वहीं जाकर, जहाँ जिंदगी है', तो वहीं लाल सिंह दिल की कविता 'प्रवासी मजदूर' आदि है। इसी तरह की कितनी कविताएँ, गाने लिखे गए, जिनमें प्रवासी मजदूरों की विडंबना को चित्रित किया गया।

साहित्य का संसार मूलरूप से लेखकों, पाठको और प्रकाशकों से मिलकर बनता है, अगर इनमें से कोई एक भी अपनी भूमिका को ईमानदारी से न निभाये तो साहित्य का संसार प्रभावित होगा। प्रकाशकों के सामने चुनौती ये है कि वह पाठकों के साथ बने रहें। ऐसे समय में जब किताबें पाठकों तक भौतिक रूप से नहीं पहुँच सकती, उस स्थिति में ये थोड़ा मुश्किल है। इसके लिए प्रकाशक अलग–अलग उपाय अपना रहें हैं। हिन्दी साहित्य के कई प्रकाशक ई–बुक तो कोई ऑडियो बुक के माध्यम से पाठकों तक पहुँच रहे हैं। तो कई प्रकाशक कुछ पुस्तके मुफ्त में उपलब्ध करा रहें है। यह कदम मोटे तौर पर तो अच्छा है, परन्तु इसके आगे खतरनाक परिणाम हो सकते हैं।

इसका एक परिणाम यह भी होगा कि पाठक वर्ग अधिक से अधिक किताबें मुफ्त में या फिर बहुत कम कीमत में चाहने लगेंगें। यह उन लेखकों के लिए भी सही नहीं होगा जिनकी पुस्तकें पाठकों को बिना कीमत चुकाए मिल जाएगी। पाठकों को पुस्तकें मुफ्त में मिलने से वे इसके अभ्यस्त हो जाएंगे तो दोबारा उन्हें कीमत चुकाने को कहना काफी मुश्किल होगा। इस प्रकार यह कदम प्रकाशक और लेखक दोनों के लिए खतरनाक होगा। इसका एक अन्य परिणाम 'पायरेसी' और इसकी नैतिकता को लेकर आएगा। पाठकों में इस भावना का जन्म होगा कि मुफ्त में पुस्तकें मिलना गलत नहीं हैं।

अन्य आपदाओं में देश–विदेश की मीडिया, राहतकर्मी, नेता, कार्यकर्ता आदि सभी दौड़–दौड़ कर बचाने या दिखावा करने पहुँच जाते हैं। परन्तु कोरोना महामारी का केन्द्र सीधा मनुष्य है, इसलिए इसमें पीड़ितों से अपने को बचाकर रखना पड़ता है। यह महामारी स्वास्थ्य सेवा करने वालों को भी प्रभावित कर रही है, ऐसा इसलिए है क्योंकि इस महामारी की कोई दवा अभी तक नहीं बनी है। सभी देशों के वैज्ञानिक, इस पर काम कर रहें है। कोरोना महामारी के सामने जीव विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान भी दयनीय स्थिति में दिख रहें हैं।

मीडिया, स्कूल, स्वास्थ्य विभाग, इंटरनेट की सुविधा शहरों में तो है मगर गांवों, कस्बों में इनकी पहुँच न के बराबर है, साथ ही भेदभाव, जातिप्रथा जैसी कुप्रथाएँ भी यहाँ विद्यमान है। शहर हो या गांव महिलाओं की स्थिति तो और भी बुरी है। महिलाओं पर घरेलू काम के साथ–साथ दफ्तरों के काम का बोझ भी बढ़ गया है। ऐसे में ऑनलाइन क्लास, वेबिनार से जुड़ना उनके लिए कठिन हो गया है।

डिजिटल दुनिया में जहाँ आज वेबिनार, फेसबुक लाइव, यू टयूब लाइव की सुविधा से लोग जुड़ रहें हैं जिनमें साहित्य, समाज और महामारियों जैसे कई विषयों पर चर्चा हो रही है। वहाँ समस्या यह भी है कि इन चर्चाओं में विषय से संबंधित कितनी बातें हो रही है और कितनी इधर उधर की बातों में समय बर्बाद हो रहा है। डिजिटल दुनिया और मीडिया कहीं ना कहीं लोगों के मन में भ्रामक स्थिति भी पैदा करती है।

अंततः हम कह सकते हैं कि इतिहास गवाह है, जब भी पृथ्वी पर आपदा, महामारी आई है, उसका चित्रण साहित्य, सिनेमा, संगीत आदि में बखूबी किया गया है। महामारियों के कारण सबकी जिंदगी में बदलाव आया है, जो साहित्य में भी देखने को मिलता है। किताबों को लेकर लोगों की रूचि बढ़ी है, इसका कारण यह हो सकता है, कि दौड़ती–भागती जिंदगी में अचानक आए ठहराव से किताबें सच्ची मित्र बनकर उभरी हैं, सोशल मीडिया ने दूर रह रहें लोगों को पास कर दिया हैं, ज़्यादातर लेखक और पाठक सोशल मीडिया के कारण आपस में जुड़ रहें हैं। अहम बात यह है, कि अप्रकाशित लेखकों के लिए सोशल मीडिया वरदान साबित हो रही है। सोशल मीडिया के कारण कई प्रवासी मजदूरों के गीत, कहानी आदि भी सामने आ रही है। कई गांव व कस्बे ऐसे हैं, जहाँ इंटरनेट की सुविधा नहीं हैं जिसके कारण ये लोग लाइव क्लास से जुड़ने में सक्षम नहीं हो पाते। डिजिटल दुनिया की एक समस्या यह भी है कि जिन विषयों पर चर्चा करने के लिए यह वेबिनार हो रहे है, उन विषयों से संबंधित कितनी चर्चा होती है। खास बात यह है कि साहित्य की अभिव्यक्ति कभी रूकती नहीं है। बस व्यक्त करने का तरीका व नजरिया बदल जाता है। कहा जा सकता है कि आने वाले समय में भी बहुत सी रचनाओं में महामारी उसका केंद्र या बिंब होगी। हो सकता है आज सोशल मीडिया में जो कविता या कहानियाँ शेयर हो रही है, वो साहित्य की कसौटी पर खरी न उतरे, परन्तु आने वाले समय में इन महामारियों, आपदाओं पर ऐसे उपन्यास, कहानियाँ, कविताएँ, मूल्यांकन आदि होंगे जो आने वाली पीढ़ी के लिए शोध के रास्ते खोल देंगी।

संदर्भ सूची

1. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, कुल्ली भाट, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ संख्या – 54
2. फणीश्वरनाथ रेणु, मैला आँचल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 10
3. वही, पृष्ठ संख्या – 13
4. यू०आर० अनन्तमूर्ति, संस्कार, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, पटना, इलाहाबाद, कोलकाता पृष्ठ संख्या – 2
5. अल्बर्ट कामू (लेखक) अनुवादक शिवदान सिंह चौहान, विजय चौहान, राज कमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 41